8.21 हिन्दी कोश निर्माण का विकास और चिंताएँ

अभिषेक अवतंस, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा

भाषा व्यवहार का सीधा संबंध शब्द और उसके अर्थ से होता है। इस कारण भाषा वैज्ञानिकों और वैयाकरणों ने शब्द और अर्थ के संबंधों पर विस्तृत चर्चा की है। वास्तव में शब्द और अर्थ भाषा के केन्द्रीय अंग हैं। उच्चारण की दृष्टि से ध्वनि भाषा की सबसे छोटी इकाई है और सार्थकता की दृष्टि से शब्द सबसे छोटे अंग के रूप में पहचाने जाते हैं। शब्द के द्वारा जो संकेत प्राप्त होता है, वही उसका अर्थ है। नियम शब्द से नियत अर्थ का ज्ञान होना हमारा दैनिक अनुभव है। डॉ. त्रिभुवन ओझा ने लिखा है–"लोक परम्परा और प्रयोग रूढ़ि ही किसी शब्द विशेष को अर्थ विशेष से जोड़ देती है।"[1] शब्द बिना अर्थ अमूर्त है और अर्थ बिना शब्द निष्प्राण। शब्द और अर्थ का संबंध शरीर और आत्मा का संबंध है। शब्द और अर्थ के इसी अंतरंग संबंध से कोश कार्य का प्रारंभ हुआ। आज यह कहना कठिन है कि संसार की किसी भाषा में कोश का प्रारंभ सबसे पहले किसने किया। लेकिन इतना तय है कि कोश के माध्यम से शब्दों के अर्थ प्रस्तुत करने की परम्परा प्रारंभ हुई। तब से आज तक हम किसी भी शब्द का अर्थ जानने के लिए लोक व्यवहार, प्रकरण, व्याख्या, सानिध्य, और व्याकरण आदि से निराश होने पर कोश का सहारा लेते हैं। आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा ने लिखा है–"शब्दार्थ की कठिनाई को दूर करने का प्रमुख साधन है कोश। प्रत्येक शब्द का अर्थ उसके सामने दिया होता है और कोश की सहायता से किसी भी अज्ञात शब्द का अर्थ जाना जा सकता है।"[2] इस तरह शब्द, भाषा-व्यवस्था की वह न्यूनतम इकाई है जो विचार या आशय तत्व की वाहिका है और इस रूप में शब्दकोश में उसका संकलन किया जाता है। यह शब्द की सत्ता का मानसिक पक्ष है जिसमें सत्ता का भौतिक पक्ष अर्थ के रूप में उपस्थित होता है। कोश में प्रविष्ट के रूप में शब्द की सत्ता स्वीकार की जाती है। आधुनिक भाषा विज्ञान मे शब्द के महत्व को शब्दविज्ञान में अध्ययन का विषय बनाया गया है। डॉ सुरेश कुमार के अनुसार– "शब्द विज्ञान के तीनों प्रकरणों – शब्दार्थ क्षेत्र, शब्दान्विति, और शब्दभंडार की संकलनात्मकता के अनुप्रयोग से भाषा शिक्षण-विश्लेषण एवं सामग्री निर्माण, शब्दकोश समीक्षा एवं शब्दकोश निर्माण और अनुवाद-विश्लेषण एवं अनुवाद कार्य अधिक व्यवस्थित तथा विश्वासोत्पादक रीति से निष्पादित किये जा सकते हैं।"[3]

शब्द विज्ञान के अंतर्गत शब्द भंडारण, शब्द वर्गीकरण, शब्द सांख्यिकी, अर्थ निर्माण और शब्दार्थ परिवर्तन के जितने भी कार्य सम्पन्न होते हैं, उन सबके सन्दर्भ में भी कोश-निर्माण प्रक्रिया का विकास हुआ है। स्पष्ट है कि कोश शब्द-भंडारण की सबसे प्रमुख विधा है। लेकिन कोश का कार्य इतना ही नहीं है। कोशों ने संसार भर की भाषाओं में शब्द के अध्ययन का इतना विस्तार किया है कि कोश विज्ञान के नाम से भाषा विज्ञान की एक शाखा ही विकसित हो गई है। डॉ. राजमणि शर्मा ने लिखा है–

> "कोश-विज्ञान का शाब्दिक अर्थ है– कोश का विज्ञान। अर्थात् कोश-विज्ञान वह विज्ञान है जिसमें कोश निर्माण की विधि का वैज्ञानिक विवेचन किया जाता है। आज यह भाषा-विज्ञान की मुख्य शाखा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है, क्योंकि इसके द्वारा कोश-निर्माण की विधि के साथ-साथ विभिन्न व्यक्तियों, भाषाओं, पुस्तकों, साहित्यों की जानकारी में सहायता मिलती है। कोश-विज्ञान को अंग्रेजी में 'लक्सीकोलाजी' (Lexicology) कहते है। कुछ विद्वान इसे कोश-विज्ञान से अलग मानते हुए 'लैक्सीकोग्राफी' (Lexicography) 'कोशकला' नाम से सम्बोधित करना उचित समझते हैं"।[4]

कोश विज्ञान और कोशकला को क्रमशः कोश के सिद्धांत और व्यवहार पक्ष के रूप में पहचाना जा सकता है। इन दोनों ही पक्षों का महत्व कोश निर्माण में एक जैसा है। भारत में अत्यन्त प्राचीन काल में कोश निर्माण प्रारम्भ हो गया था। ई.पू. 1000 में ही यास्क ने 'निघण्टु' से कोश-निर्माण का सूत्रपात किया था। इसके बाद भी संस्कृत में निरन्तर कोशों का निर्माण होता रहा। यूरोपीय भाषाओं में 1000 ई. तक कोशों की व्यवस्था नहीं थी। अंग्रेजी में तो 16वीं शताब्दी के पहले कोश तैयार नहीं हुए थे। आधुनिक भारतीय भाषाओं की कोश परम्परा अठारवीं शताब्दी में प्रारम्भ हुई। संसार भर की विकसित भाषाओं में कोशों की व्यवस्थित परम्परा मिलती है। आज कोश के विभिन्न रूप और भेद भी मिलते हैं। इन्हें कम से कम सात श्रेणियों में तो विभाजित किया ही जा सकता है–

1. **व्यक्ति कोश** : किसी एक रचनाकार की कृतियों में प्रयुक्त शब्दों को संदर्भ सहित अकारादिक्रम में प्रस्तुत करते हुए उनके अर्थ की व्याख्या व्यक्तिकोश के अंतर्गत होती है। अंग्रेजी में शेक्सपीयर और

अभिषेक अवतंस केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा में कार्यरत है (ई-मेल abhiavtans@gmail.com)

कीट्स द्वारा प्रयुक्त शब्दों के ऐसे कोश बने हैं तो हिन्दी में भी निराला कोश, प्रसाद काव्यकोश, जायसी कोश आदि इसी के उदाहरण है।

2. **पुस्तक कोश** : किसी लेखक की किसी एक कृति में प्रयुक्त शब्दों या विचारों की अकारादिक्रम में सम्पूर्ण अर्थ चर्चा पुस्तक कोश में होती है। मानस सूक्ति कोश, कामायनी कोश आदि ऐसे ही कोश हैं।,

3. **विषय कोश** : ज्ञान-विज्ञान या लेखन के किसी एक क्षेत्र का चयन कर उससे सम्बन्धित समस्त सामग्री की जानकारी देना ही विषय कोश का उद्देश्य होता है। दर्शन कोश, अर्थशास्त्र कोश, भाषाविज्ञान कोश, मानविकी कोश, साहित्यशास्त्र कोश, जैसे सभी कोशों में संबंधित विषय से जुड़ी जानकारी अकारादिक्रम से देने का प्रयास किया जाता है।

4. **भाषा कोश** : डॉ. राजमणि शर्मा के अनुसार – ''कोश-निर्माण की वह प्रक्रिया जिसमें किसी भाषा के शब्दों, प्रयोगों, मुहावरों, लोकोक्तियों आदि का अकारादिक्रम से संकलन करके सम्यक् व्याख्या की जाती है, भाषा कोश है''।[5] डॉ. भोलानाथ तिवारी ने लिखा है – ''एक भाषा के कोश, जिनमें अर्थ उस भाषा से उसी भाषा में दिए गए हों या जिनमें अर्थ एक भाषा से दूसरी भाषा में हों, प्रमुखतः तीन प्रकार के हो सकते हैं– वर्णनात्मक, तुलनात्मक और ऐतिहासिक''।[6] वास्तव में भाषाओं की दृष्टि से ऐसे भाषा कोश एक भाषा कोश, द्विभाषा कोश और बहुभाषा कोश के रूप में भी वर्गीकृत किए जा सकते हैं। भाषाकोश के अंतर्गत किसी भाषा विशेष की प्रयुक्तियों के कोश भी परिगणित होते हैं। पर्याय कोश, मुहावरा कोश, लोकोक्ति कोश, छंद कोश, अलंकार कोश, चुटकुला कोश, प्रयुक्ति कोश, लोकभाषा, तुकांत कोश, अनुकरणात्मक कोश, अभिव्यक्ति कोश जैसे कई कार्य हिन्दी और कई विकसित भाषाओं में हुए हैं।

5. **विश्वकोश** : ऐसे कोश में ज्ञान विज्ञान की सभी दिशाओं में व्यवहृत शब्दों का विवरण पूरी प्रामाणिकता एवं जानकारी के साथ उपलब्ध रहता है। सुप्रसिद्ध 'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका' और 'इन्साइक्लोपीडिया अमेरिकाना' जैसे चर्चित विश्व कोशों की परम्परा में नागेन्द्रनाथ बसु ने 'हिन्दी विश्वकोश' तैयार किया है।

6. **पारिभाषिक कोश** : प्रत्येक भाषा में उसकी प्रयुक्तियों में विस्तार के साथ-साथ नए-नए परिभाषिक तकनीकी शब्दों का विकास भी हुआ है। पारिभाषिक शब्दावली से तात्पर्य उन शब्दों से है, जो ज्ञान, विज्ञान और प्रयुक्ति की किसी विशेष शाखा के अर्थ-संदर्भ में ही प्रयोग किए जाते हैं। प्रशासन, विधि, कृषि, विज्ञान, खेल, संचार आदि विभिन्न क्षेत्रों के अपने पारिभाषिक शबदों के अपने-अपने कोश कहलाते हैं। तद्नुसार प्रशासनिक शब्दकोश, बैंकिंग शब्दकोश, शिक्षा कोश, कम्प्यूटर कोश आदि का निर्माण होता रहा है। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के लिए 45 से अधिक शीर्षकों में पारिभाषिक शब्दावलियाँ प्रकाशित की हैं।

7. **अध्येता कोश** : किसी भाषा को सीखने वाले जिस कोश का उपयोग करते हैं, वह अध्येता कोश है। डॉ. सीताराम शास्त्री के अनुसार – ''सामान्यतः किसी भाषा को सीखने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखा गया कोश अध्येता कोश कहलाता है''।[7]

इन सात श्रेणियों के प्रमुख कोशों के साथ ही व्युत्पति कोश, वर्तनी कोश, आवृत्ति कोश, कूटभाषा कोश, समांतर कोश जैसे कई अन्य कोशों का उपयोग भी शब्द और अर्थ की संगति बैठाने के अतिरिक्त भाषा के अन्य प्रकार्यों के सन्दर्भ में किया जाता है। कोश विज्ञान ने ऐसी उपादेयता प्रमाणित कर दी है कि

आज भारतीय भाषाओं में तीन हजार से अधिक कोश उपलब्ध हैं। इनमें हिन्दी कोशों की संख्या सबसे अधिक 380 से अधिक है। भारत में कोश परम्परा ई.पू. 1000 में यास्क के 'निघुण्ट' से प्रारंभ हुई थी, लेकिन उसका वर्तमान रूप यूरोपीय सम्पर्क के बाद ही सामने आया है। हिन्दी में आधुनिक प्रणाली के वर्गीकरण, क्रम निर्धारण और व्यवस्था के अनुसार कोश निर्माण का कार्य यूरोपीय विद्वानों ने किया। डॉ. पूरन चन्द टण्डन ने ठीक ही लिखा है–

> "विदेशी विद्वानों के हिन्दी कोश लेखन से पूर्व भारतीय विद्वानों ने भी समय-समय पर इस दिशा में कार्य किया। किन्तु वह कार्य वैज्ञानिक एवं आधुनिक न बन सका। अतः यह भी स्पष्ट होना ही चाहिए कि कोश-कला को एक सदृढ़ व्यवस्था तथा सुलझी हुई वैज्ञानिक दृष्टि विदेशी विद्वानों ने ही दी।"[9]

इस संदर्भ में नागरी प्रचारिणी सभा से प्रकाशित 'हिन्दी शब्दसागर' की भूमिका का यह अंश देखा जा सकता है– 'जब अंग्रेजों का भारतवर्ष के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित होने लगा तो नवागन्तुक अंग्रेजों को इस देश की भाषाएँ जानने की विशेष आवश्यकता जान पड़ने लगी, फलतः वे देशी भाषाओं के कोश अपने सुभीते के लिए बनाने लगे। इस प्रकार के इस देश में आधुनिक ढंग के और अकारादि क्रम से बनने वाले देश की भाषाओं में से सबसे पहले हिन्दी के दो शब्दकोश श्रीयुत् जे. फरगुसन नामक एक सज्जन ने प्रस्तुत किए थे जो रोमन अक्षरों में 1773 में लन्दन में छपे थे। इनमें से एक हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी का और दूसरा अंग्रेजी-हिन्दुस्तानी का था। इसी प्रकार का एक कोश 1790 में छपा था जो श्रीयुत् हेनरी हेरिश के प्रयत्न का फल था। 1808 में लन्दन में श्रीयुत् शेक्सपीयर का एक अंग्रेजी-हिन्दस्तानी और एक हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी कोश निकला।'

हिन्दी भाषा या देवनागरी अक्षरों में सबसे पहला कोश पादरी एम.टी. एडम ने तैयार किया जो 1829 में हिन्दी कोश के नाम से कलकत्ता में प्रकाशित हुआ।[10] इस प्रस्तावना से जानकारी मिलती है कि जे. फरगुसन का 1773 में प्रकाशित 'ए डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी लैंग्वेज' हिन्दी में कोश-निर्माण का पहला प्रयास था। फिर हेनरी हेरिश ने 1790 में 'ए डिक्शनरी इंग्लिश एण्ड हिन्दुस्तानी' प्रस्तुत किया, जिसमें हिन्दी के 1000 शब्दों का ब्योरा है।' हेरिश के ही समकालीन कर्क पैट्रिक ने भी 'ए न्यू ग्रामर एण्ड डिक्शनरी' की तैयारी 1785 में की, लेकिन अब यह कोश उपलब्ध नहीं है। 1808 में प्रकाशित विलियम हण्टर के 'हिन्दुस्तानी-अंग्रेजी कोश' की जानकारी भी मिलती है। यह ग्रंथ दो खण्डों में था और टी. हर्बर्ट के हिन्दुस्तानी प्रेस से रोमन अक्षरों में छपा था। इसकी विशेषता यह रही कि इसमें अरबी-फारसी और हिन्दी संस्कृत के शब्द भी हैं। जॉन रोबक ने 1811 में 'डिक्शनरी इंग्लिश हिन्दुस्तानी' प्रस्तुत किया। इसके बाद 1817 में जॉन शेक्सपीयर ने 70,000 शब्दों वाली 'हिन्दुस्तानी-इंग्लिश डिक्शनरी' तैयार की और 1829 में फादर मैथ्यू थामसन एडम ने 'डिक्शनरी हिन्दी टू हिन्दी' प्रस्तुत की। यह हिन्दी में अपने प्रकार का पहला कोश था, जिसमें पहली बार हिन्दी शब्दों के अर्थ हिन्दी में ही दिए गए थे। इसके बाद भी उन्नीसवीं शताब्दी में कइ अन्य शब्दकोश हिन्दी से संबंधित सामने आए। जैसे–

1. ए. टी. थामसन : हिन्दी एण्ड इंग्लिस डिक्शनरी,1846
2. डंकट फोर्ब्स : हिन्दुस्तानी इंग्लिश डिक्शनरी, 1848
3. जी.ग्रांट : ऐंग्लो हिन्दुस्तानी वोकेबुलरी, 1850
4. हैजेल ग्रोव : ए वोकेबुलरी – इंग्लिश एण्ड हिन्दुस्तानी, 1865
5. फादर जे. डी. बेट. : ए डिक्शनरी ऑफ हिन्दी लैंग्वेज, 1870
6. फेलन ' न्यू इंग्लिश हिन्दुस्तानी डिक्शनरी, 1883
7. ए. टी. फ्लांट्स : उर्दू हिन्दी इंग्लिश डिक्शनरी, 1884
8. श्रीधर त्रिपाठी : श्रीधर कोश, 1894
9. फादर थॉमस क्रेवेल : इंग्लिश हिन्दी डिक्शनरी, 1894

उन्नीसवीं शताब्दी के इन सभी हिन्दी कोशों में फादर बैट और श्रीधर त्रिपाठी के कोश सबसे अधिक सराहे गए। हिन्दी व्याकरण तथा ध्वनि गठन पर विचार करने के साथ ही साथ फादर बेट ने अपने कोश में हिन्दी की बोलियों के शब्दों को भी लिखा है। श्रीधर त्रिपाठी का कोश किसी हिन्दी भाषी भारतीय द्वारा तैयार किया गया पहला कोश था। इसके बाद ही हिन्दी कोशकारों का समूह कोशों की रचना में जुटा। नागरी प्रचारिणी सभा की ओर से श्याम सुन्दर दास, रामचंद्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा आदि सात संपादकों की देन **'हिन्दी शब्द.सागर'** 1912 से 1928 तक आठ

खंडों में प्रकाशित हुआ था, जिसमें 93115 शब्द थे। तब तक का यह सबसे पूर्ण कोश था, जिसमें व्युत्पतियाँ भी दी गई थी, अर्थ-पक्ष बढ़े-चढ़े स्तर का था तथा मुहावरे और साहित्यिक उद्धरण अच्छे पिरोए गए थे। उसका परिवर्धित संस्करण 1965 से 1975 तक 11 खंडों में निकला, जिसके कुल 5800 पृष्ठों में 2,03,000 शब्द हैं। इसके बाद हिन्दी में शब्दकोशों की कतार लग गई। हिन्दी के कुछ प्रमुख शब्दकोश इस प्रकार हैं–

1. द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी : हिन्दी शब्दार्थ पारिजात, 1914
2. रामचन्द्र वर्मा : संक्षिप्त शब्द सागर, 1939
3. रमाशंकर शुक्ल रसाल : भाषा शब्द कोश, 1936
4. रामचन्द्र वर्मा : प्रामाणिक हिन्दी कोश, 1949
5. नवल : नालन्दा विशाल शब्दसागर, 1950
6. रामचन्द्र पाठक : भार्गव आदर्श हिन्दी कोश, 1950
7. ब्रज किशोर मिश्र : राष्ट्रभाषा कोश, 1951
8. विश्वेश्वर नारायण श्रीवास्तव, देवी दयाल चतुर्वेदी : हिन्दी राष्ट्रभाषा कोश, 1952
9. कालिका प्रसाद एवं अन्य : बृहत् हिन्दी कोश, 1952
10. केदारनाथ भट्ट : अभिनव अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी, 1955
11. दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा : भारतीय हिन्दी कोश, 1956
12. पुरूषोत्तम नारायण अग्रवाल : नालन्दा अद्यतन कोश, 1957
13. बलराम सिंह : हिन्दी शब्दकोश, 1957
14. आदित्येश्वर कौशिक : अशोक हिन्दी कोश, 1958
15. मुहम्मद मुस्तफा खाँ : उर्दू-हिन्दी कोश 1959
16. डॉ. हरदेव बिहारी : बृहत् अंग्रेजी हिन्दी कोश, 1960
17. रामचन्द्र वर्मा : मानक हिन्दी कोश, 1962
18. राममूर्ति सिंह : सामान्य अंग्रेजी हिन्दी कोश, 1964
19. शिवराम वामन आप्टे : संस्कृत हिन्दी कोश, 1966
20. डॉ. कामिल बुल्के : अंग्रेजी हिन्दी कोश, 1968
21. रामचन्द्र वर्मा : प्रमाणिक हिन्दी कोश, 1970
22. व. म. बेस्क्रोब्नी : हिन्दी रूसी शब्दकोश, 1972
23. बद्रीनाथ कपूर : व्यवहारिक हिन्दी कोश 1975
24. डॉ. गोविन्द चातक : आधुनिक हिन्दी शब्दकोश, 1980
25. डॉ. भोलानाथ तिवारी : व्यवहारिक हिन्दी कोश, 1983
26. डॉ. द्वारिका प्रसाद: हिन्दी अंग्रेजी कोश, 2002
27. वीरेन्द्र नाथ मंडल : हिन्दी शब्दकोश 2005
28. अरविन्द कुमार एवं कुसुम कुमार : समांतर कोश

हिन्दी में प्रकशित भाषा शब्दकोशों की सूची वास्तव में इतनी ही नहीं हैं। अनेक प्रकाशकों ने अनेक प्रयोजनों से अपने शब्दकोश तैयार किए। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय ने व्यवहारिक हिन्दी अंग्रेजी कोश तैयार किया है और हिन्दी के साथ गुजराती, सिन्धी, उर्दू, मलयालम, तमिल, तेलुगू, बांगला, उड़िया, मराठी, मिज़ो, कश्मीरी, असमिया, पंजाबी, स्पेनी, अरबी, चीनी, जापानी, फ्रेन्च, जर्मन, कोरियाई, सिंहली, फारसी, इंडोनेशियाई भाषाओं के शब्दों के द्विभाषी– त्रिभाषी शब्दकोश भी प्रकाशित किए हैं। डॉ. रमेश चन्द्र मेहरोत्रा ने लिखा है– 20वीं शताब्दी के सातवें, आठवें और नावें दशकों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान कोश कई दर्जन प्रकाशित हुए हैं। पर नए सामान्य शब्दकोशों का अकाल पड़ गया है। निश्चय ही 1970 के बाद हिन्दी और अन्य आधुनिक भारतीय भाषाओं में सूक्ति कोश, संस्कृत कोश, सचित्र बाल कोश, अंक प्रतीक कोश, वनस्पति कोश, क्रिया कोश आदि बहुआयामी विश्वकोशों एवं पारिभाषिक कोशों का विकास बहुत तीव्रता से हुआ है। इनमें डॉ. नागेन्द्र द्वारा सम्पादिक भारतीय साहित्य कोश (1981), अरविन्द कुमार और कुसुम कुमार द्वारा रचित हिन्दी का थिसोरस समांतर कोश (1995) और राजेश गंगवार के कम्पूटर कोश (2006) जैसे अनेक विशिष्ट कोश हैं यह स्थिति भारतीय कोश विज्ञान के वर्तमान और भविष्य के बारे में अनेक सवाल उठाती है। विशेषतः हिन्दी कोश निर्माण के सन्दर्भ में यह चिंता व्यापक और सटीक है कि हाल के अधिकांश शब्दकोशों में न तो भाषा प्रयुक्ति के नए क्षेत्रों का सम्पूर्ण समावेश है, न देशी-विदेशी नवगत शब्दों का समाहार और न ही साहित्य या जनजीवन से सीधा सम्पर्क बनाने का प्रयत्न है।

20वीं सदी के आखिरी में आई सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति ने कोश विज्ञान के क्षेत्र में नई आशाएँ जगाई हैं। केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुम्बई, सीडैक, पूना व नोएडा, आई.आई.आई.टी. हैदराबाद, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, आई.आई.टी. कानपुर, आई.आई.आई.टी. इलाहाबाद आदि में हो रहे संगणक विषयक कोश कार्य एवं कार्पोरा परियोजनाओं से दिन प्रतिदिन हिन्दी के कोशों का भविष्य उज्ज्वल नजर आता है। क्षेत्रीय भाषाओं की महत्ता को न केवल सरकारी शोध संस्थाओं ने समझा है बल्कि निजी क्षेत्र की कंपनियाँ भी क्षेत्रीय भाषाओं में अपने उत्पाद बेंचना चाहती हैं। इसी दिशा में माइक्रोसॉफ्ट इंडिया ने ऑफिस 2003 हिन्दी संस्करण का लोकार्पण

किया। चेन्नई शहर की एक कंपनी द्वारा निर्मित शक्ति ऑफिस भी इसी दिशा में एक अच्छा प्रयास हैं। साथ ही साथ लिनक्स समूह के मुक्त सॉफ्टवेयरों में हिन्दी ओपेन ऑफिस भी अपनी पैठ हिन्दी शब्दकोशों के विकास में जमा रहा।

परन्तु यह सच है कि हिन्दी कोश निर्माण उन ऊँचाईयों को नहीं छू पा रहा है जहाँ अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेन्च आदि विश्व की अन्य प्रमुख भाषाएँ पहुँच चुकी हैं। हमें स्वीकारना होगा कि भारत में आई सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति ही कोश विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी को विश्व शक्ति बना सकता है।

सन्दर्भ संकेत

1. डॉ. त्रिभुवन ओझा : हिन्दी में अनेकार्थकता का अनुशीलन पृ. 9
2. देवनाथ शर्मा : भाषाविज्ञान की भूमिका, पृ. 259
3. डॉ. राजमल बोरा : भाषाविज्ञान, पृ. 216
4. डॉ. राजमणि शर्मा : आधुनिक भाषा विज्ञान पृ. 297
5. डॉ. भोलनाथ तिवारी : भाषाविज्ञान, पृ. 416
6. गवेषणा, जनवरी 1985 पृ. 120
7. नया आलोचक, जुलाई, सितम्बर 1999 पृ. 43
8. श्यामसुन्दर दास एवं अन्य (संपा.) : हिन्दी शब्दसागर, भूमिका पृ. 3
9. डॉ. सुरेश कुमार, संपादक : हिन्दी के प्रयुक्तिपरक आयाम पृ. 73
10. भाषा, भाषाविज्ञान विशेषांक, अगस्त 1973 पृ. 484

This paper was presented at LRIL-2007: National Seminar on Creation of Lexical Resources for Indian Language Computing and Processing at C-DAC Mumbai (26th to 28th March 2007), jointly organized by the Commission for Scientific and Technical Terminology (CSTT), New Delhi, MHRD, Govt. of India and the Centre for Development of Advanced Computing (C-DAC), Mumbai, Department of Information Technology, MC&IT, Govt. of India.